

Padma Shri



SHRI ASHOK KUMAR BISWAS

Shri Ashok Kumar Biswas is a thriving folk artist from Bihar, who has consecrated five decades of his life towards reviving Tikuli Art, an ancient craft dating back to the Mauryan period, by transforming it into the form of a folk painting and providing gratis training to uplift the women of rural and sub-urban areas of Bihar.

2. Born on 3rd October, 1956 at Rohtas, Bihar, Shri Biswas was exposed to financial struggles at an early age. He acquainted himself with painting while working with his elder brother in a shop of sign boards. After being skillfully trained from the Shilp Anusandhan Sansthan, Patna in 1973, he devotionally committed himself to the elevation of the fading Tikuli Art. His mentors, Shri Upendra Maharathi (Padma Shri awardee) and Shri Lai Babu Gupta, two of the prominent artists of Bihar guided him on the path of revival of the age-old craft.

3. While its origin lies in intricate 'bindis' which have graced women's foreheads since eons, Shri Biswas transformed it into a rich and refined folk painting of Bihar, which emerged as a significant promoter of women empowerment too. Approximately 8000 women have been trained by him, out of which a multitude earn their livelihood with their creativity.

4. In the 1982 Asian Games, the then Prime Minister of India chose Shri Biswas's Tikuli Paintings as the official gift for all the participating athletes from across the globe. He has represented Bihar in more than 100 exhibitions all over India, and has also represented India at various international exhibitions. Through his dedication, Tikuli painting is now a part of both, the 'Make in India' Movement and 'One District, One Product' Movement. He has held numerous incredible workshops notably, under the Guru Shishya Parampara Scheme; All India Workshop on Folk Art; Visual Arts of Bihar, EZCC-all by the Ministry of Culture, Government of India. He has also conducted countless training programmes like those under the Kaushal Vikas Mission, Government of India; by the Ministry of MSME, Government of India; others held by the Government of Bihar; and furthermore in schools, universities and organisations to connect more and more people with this flourishing folk art. His Tikuli paintings adorn the walls of the Bihar Museum, the Secretariat; the Chief Minister's Office; EZCC Headquarters; Ministry of Culture, Government of India Headquarters and a plethora of other esteemed offices and embellished homes.

5. Shri Biswas has been awarded by numerous organisations for his extraordinary contributions towards the folk art. He was honoured with the State Award in 2008 by the Government of Bihar; the Kala Shri Award by the Government of India in 2009; Gold Medal in IHGF Delhi Fair in 2020; felicitation by the Ministry of Culture, Government of India and by the Governors of Bihar; appreciation awards by the Royal Government of Bhutan at the 9th SAARC Fair; and scores of other prestigious awards and felicitations.

पद्म श्री



श्री अशोक कुमार बिश्वास

श्री अशोक कुमार बिश्वास बिहार के एक संपन्न लोक कलाकार हैं, जिन्होंने बिहार के ग्रामीण और उप-शहरी क्षेत्रों की महिलाओं के उत्थान के लिए लोक चित्रकला के रूप में बदलाव लाते हुए और निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान करते हुए मौर्य कालीन प्राचीन शिल्प टिकुली कला को पुनर्जीवित करने के लिए अपने जीवन के पांच दशक न्यौछावर किए हैं।

2. दिनांक 3 अक्टूबर, 1956 को रोहतास, बिहार में जन्मे, श्री बिश्वास को कम उम्र में ही गरीबी से जूझना पड़ा। साइन बोर्ड की एक दुकान में अपने बड़े भाई के साथ काम करते हुए उनका चित्रकला से परिचय हुआ। वर्ष 1973 में शिल्प अनुसंधान संस्थान, पटना से कुशलतापूर्वक प्रशिक्षित होने के बाद, उन्होंने लुप्त हो चुकी टिकुली कला को शीर्ष तक पहुंचाने के लिए समर्पित रूप से स्वयं को प्रतिबद्ध किया। उनके संरक्षक, बिहार के दो प्रमुख कलाकारों श्री उपेन्द्र महारथी (पद्म श्री विजेता) और श्री लाई बाबू गुप्ता ने सदियों पुराने शिल्प कला के पुनरुद्धार के लिए उनका पथ-प्रदर्शन किया।

3. जबकि, इसकी उत्पत्ति जटिल 'बिंदी' से हुई है, जिसने सदियों से महिलाओं के माथे की शोभा बढ़ाई है, श्री बिश्वास ने इसे बिहार की एक समृद्ध एवं परिष्कृत लोक चित्रकला में बदल दिया, जो महिला सशक्तीकरण के एक महत्वपूर्ण प्रवर्तक के रूप में भी उभरी। उनके द्वारा लगभग 8000 महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया है, जिनमें से बहुसंख्य महिलाएं इस रचनात्मकता से अपनी आजीविका कमा रही हैं।

4. वर्ष 1982 के एशियाई खेलों में, भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने दुनिया भर से भाग लेने वाले सभी खिलाड़ियों के लिए औपचारिक उपहार के रूप में श्री बिश्वास की टिकुली चित्रकला को चुना। उन्होंने पूरे भारत में 100 से अधिक प्रदर्शनियों में बिहार का प्रतिनिधित्व किया है और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भारत का प्रतिनिधित्व भी किया है। उनके समर्पण के जरिये, टिकुली चित्रकला अब 'मेक इन इंडिया' अभियान और 'वन डिस्ट्रिक्ट, वन प्रोडक्ट' अभियान दोनों का हिस्सा बन गई है। उन्होंने गुरु शिष्य परम्परा योजना के अंतर्गत विशेष रूप से कई अतुल्य कार्यशालाएं आयोजित की हैं – जैसे कि अखिल भारतीय लोक कला कार्यशाला; बिहार की दृश्य कला, ईजेडसीसी-इन सभी का आयोजन संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के माध्यम से किया गया है। उन्होंने कौशल विकास मिशन, भारत सरकार के तहत; एमएसएमई मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम; बिहार सरकार द्वारा आयोजित अन्य कार्यक्रम; और इसके अलावा स्कूलों, विश्वविद्यालयों और संगठनों में ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस फलती-फूलती लोक कला से जोड़ने के लिए अनगिनत प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए हैं। उनकी टिकुली चित्रकला बिहार संग्रहालय, सचिवालय, मुख्यमंत्री कार्यालय, ईजेडसीसी मुख्यालय; संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार मुख्यालय और अन्य प्रतिष्ठित कार्यालयों और अलंकृत भवनों की दीवारों की शोभा बढ़ा रही है।

5. श्री बिश्वास को लोक कला के प्रति उनके असाधारण योगदान के लिए कई संगठनों द्वारा पुरस्कार किया गया है। उन्हें वर्ष 2008 में बिहार सरकार द्वारा राज्य पुरस्कार; वर्ष 2009 में भारत सरकार द्वारा कला श्री पुरस्कार; वर्ष 2020 में आईएचजीएफ दिल्ली मेले में स्वर्ण पदक; संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार और बिहार के राज्यपालों द्वारा सम्मान; 9वें सार्क मेले में भूटान की शाही सरकार द्वारा प्रशंसा पुरस्कार; और कई अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए।